Why did Jesus Die?

1. Because we are all sinners!

Mark 2:17 “ईसू अनकेस अउर ओनसे कहेस, “जउन हिट्ठ पुट्ठ मनई अहइँ, का ओनका बैद्य चाही? मुला जउन बेरमिया अहइँ, ओनका बैद्य चाही। मइँ धर्मी बरे नाहीं मुला पापियन लोगन्क बोलॉबइ आइ हउँ।”

Romans 3:10 पवित्तर सास्तरन कहत हीं:“कउनो धर्मी नाहीं अहइ, एक ठु भी नाहीं!

Matthew 18:11 “मनई क पूत भटक गवा मनइयन क उद्धार बरे आइ अहइ।

2. Because there is a cost for your sin!

Matt 15:18-20 मुला जउन मनई क मुँहे स बाहेर आवत ह, उ ओकरे मने स निकरत ह। इहइ ओका अपवित्तर करत ह। काहेकि बुरा बिचार, कतल, व्यभिचार, बुरी चाल, चोरी, झूठ अउर निन्दा सबइ बुराई मनवा स ही आवत हीं। इहइ अहइँ जेसे कउनो अपवित्तर बनत ह। वे हाथ धोए खाइ स कउनो अपवित्तर नाहीं होत।”

Romans 6:23 “काहेकि पाप क मूल्य तो बस मृत्यु ही अहइ। ……”

Mark 16:16 जउन कउनो बिसवास करत ह अउर बपतिस्मा लेत ह, ओकर बचावा होई अउर जउन बिसवास न करी, उ दोखी माना जाइ।

There is a cost for your sin!

2. Because Jesus died and paid for our sins on the cross!

Matt. 1:21 “उ एक पूत क जनमी। तू ओकर नाउँ ईसू धार्‌या काहेकि उ आपन मनइयन क पापन स उद्धार देई।”

Romans 5:8 मुला परमेस्सर तउ हमपे आपन पिरेम देखायेस। जबकि हम तउ पापी ही रहे; परन्तु ईसू त हमरे बरे परान तजि दिहेस।

John 3:16 परमेस्सर इ दुनिया स इतना पिरेम करत रहा कि अपने एकलौता पूत क दइ दिहेस, जइसे कि ओहमाँ बिसवास करइवाला कउनो मनई क नास न होइ, ओका अनन्त जीवन मिल जाइ। ”

Matt. 18:11 “मनई क पूत भटक गवा मनइयन क उद्धार बरे आइ अहइ।

Christ died for sinners!

3. Salvation is a free gift, not by good works. You must take God’s word for it, and trust Jesus alone!

Eph. 2:8-9 **परमेस्सर क अनुग्रह दुआरा आपन बिसवास क कारण तू बचावा गया ह। इ तू सबन क तोहरी कइँती स मिली नाहीं बा, बल्कि इ तउ परमेस्सर क बरदान अहइ। इ हमरे किहे कर्मन क परिणाम नाही बा कि हम एकर गरब कइ सकी।**

Titus 3:5 **उ हमार उद्धार किहेस। इ हमार निर्दोस ठहराइ जाइके बरे हमार कीहीउ काम द्वारा नाहीं भवा बल्कि ओकरी करूणा द्वारा भवा। उ हमार रच्छा ओह स्नान क द्वारा किहेस जेहमाँ हम फिन पइदा होइत ह अउर पवित्तर आतिमा क द्वारा नवा बनावा जात अहीं।**

Acts 4:12 **कउनो दूसर स उद्धार नाहीं अहइ, संसारे मँ अउर दूसर नाउँ नाहीं अहइ जेहसे मानव जाति बचाई जाय सकइ। हम सब ईसू स ही उद्धार पाउब!"**

5. We must put our faith and trust in Christ alone!

Mark 9:23 "ईसू ओसे कहेस, "तू कहया जदि तू कछू कइ सका? जउन बिसवास करी, ओका बरे सब कछू होइ जाई।"

Mark 1:15 "उ कहेस, "समइ पूरा होइ गवा परमेस्सर क राज्य नगिचे अहइ। सब जने मनफिरावा अउर सुसमाचार मँ बिसवास करा।"
Mark 10:15 "मइँ तोहका सच सच बतावत हउँ, जउन परमेस्सर क राज्य क गदेलन क नाईं सुआगत न करी, उ राज्य मँ कबहुँ न घुसी।"

Romans 10:9-10,13 कि अगर तू अपने मूँहे स घोसित करा, "ईसू मसीह पर्भू अहइ", अउर तू अपने मने मँ इ बिसवास करा कि परमेस्सर तउ ओका मरा हुवन मँ स जिन्दा किहेस तउ तोहार उद्धार होइ जाई। काहेकि अपने हृदय क बिसवास स मनई धार्मिक ठहरावा जात ह अउर अपने मुँहे स ओकरे बिसवास क

स्वीकार करइ स ओकर उद्धार होत ह। पवित्तर सास्तर कहत ह, “हर केऊ जउन पर्भू क नाउँ लेत हीं, उद्धार पइहीं।”

If you want to accept Jesus Christ as your Savior and receive forgiveness from God, here is prayer you can pray. Saying this prayer or any other prayer will not save you. It is only trusting in Jesus Christ that can provide forgiveness of sins. This prayer is simply a way to express to God your faith in Him and thank Him for providing for your forgiveness.

"Lord,

I know that I am a sinner. I know that I deserve the consequences of my sin. However, I am trusting in Jesus Christ as my Savior. I believe that His death and resurrection provided for my forgiveness. I trust in Jesus and Jesus alone as my personal Lord and Savior. Thank you Lord, for saving me and forgiving me! Amen!"